P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आधुनिक युग के प्रमुख वैचारिक आन्दोलनों में हिन्दी कहानी स्वरूप और संवेदना

अरुण कुमार साह
अतिथि अध्यापक,
विभागाध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
खान्द्रा महाविद्यालय,
खान्द्रा

सारांश

हिन्दी कथा साहित्य जनतांत्रिक विधा है। इसका उदय पूरी दुनियां में जनतंत्र के साथ हुआ। आशय यह है कि जैसे सामंतवाद की आकांक्षा की साहित्यक अनेकता कविता हुआ करती थी। उसी तरह जनतांत्रिक जीवन प्रणाली की साहित्यक अनेकता कथा साहित्य हुआ इसीलिए आमजनो की आकांक्षाओं की अनेकता इस कला में सबसे ज्यादा हुई। 19वी शताब्दी का विश्व और 20वी शती का भारत एक ऐसा समय है जब सामंतवाद अपने मौत मर गया और जनवाद उसके बाद एक एक नयी शैली नयी विचारधारा के रूप में प्रकट हुआ। यही कारण हुआ कि जनवाद से जन्मा कथा साहित्य सामंतवाद से जन्मे काव्यसाहित्य से आगे निकल गया। इससे अपने देश एवं विश्व में भी विभिन्न विचार धाराओं का आगमन हुआ। अतः आधुनिक युग के प्रमुख वैचारिक अन्दोलन में हिन्दी कहानी स्वरूप और संवेदना को बहुत गहरे रूप में प्रभावित किया है।

मुख्य शब्द : माक्सर्वाद, फ्रायडवाद, अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषणवाद, नक्सलवाद, रूसी क्रान्ति, कम्युनिष्ट पार्टी, विचार धाराओं के प्रभाव।

प्रस्तावना

हिन्दी कहानी के विकास में दो चिन्ताधाराओ का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है, पहला भारतीय विचारधारा और दुसरा पाश्चात्य विचारधारा। ये तो हिन्दी कथा साहित्य का सम्बन्ध आधुनिक युग से है लेकिन चुँकि यह एक लोकतांत्रिक साहित्यक विचार है, अतः सारी दुनिया में जैसे–जैसे लोकतंत्र का विकास हुआ उसी अनुपात में कथा साहित्य भी विकसित होता गया। मुलतः भारतेन्तु युग से गद्य का विकास आरम्भ होता है। इस युग से लेकर अबतक हिन्दी साहित्यक जिन भारतीय विचारधाराओं का प्रभाव सबसे ज्यादा रहा उसमें आर्य समाज और सुधारकाल (नवजागरण) महात्मा गाँधी और नेहरू के विचार और तीसरा नकसलवादी आन्दोलन का प्रभाव प्रमुख रहा।

अध्ययन का उद्देश्य

हिन्दी कथा साहित्य उतना ही प्राचीन है जितना कि मानव स्वयं। आदिकाल से ही मानव में कहानी कहने और सुनने की प्रबल लालसा रही है। भारतीय साहित्य में वेदो, उपनिषदों, बौद्य जातकों और संस्कृत साहित्य में अनेक कहानियाँ देखने को मिलती है। ऋग्वेद, ब्रह्मण–ग्रन्थों और उपनिषदों में अनेक सांकेतिक कहानियाँ मिलती है। लौकिक सस्कृंत–साहित्य में भी कथा साहित्य का प्राधान्य है। 'पंचतंत्र' तथा 'हितोपदेश' में नीतिपरक कथांएँ वर्णित है। 'कथा सरित्सागर', वेतालपंच–विंशति', गुणाढ्य–कृत 'वृहत्कथा' आदि में भी प्राचीन भारतीय कहानियों के दर्शन होते है। पर आधुनिक लघुकथाओं का विकाश पाश्चात्य लघुकथाओं के अनुकरण पर ही हुआ है। पाश्चात्य विचारधारा में पनपे प्रमुख वैचारिक परिदृश्य में हिन्दी कहानियाँ समाज में एक अमित छाप छोड़ते हुए गहरे प्रभाव डालते है।

साहित्यावलोकन

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती थे। उन्होने आर्य समाज की स्थापना इसलिए की ताकि समाज में व्याप्त अंधविश्वास, मूर्तिपूजा, रूड़ियों, कुरूतियों इन सबको समाप्त कर दिया जाय। साथ ही साथ एक ऐसे समाज की स्थापना की जाय जिसमे राष्ट्रीयता का गुण कुट–कुट कर भरा हो। उसी दौर में बंगाल के महासंत विवेकानंद ने पूरे समाज में राष्ट्रीयता और समानता का दर्शन प्रभावित किया। इसी कारण इस दौर में पूरे कथा आनेपर चाहे वह 'बालकृष्ण भट्ट' की रचना हो, प्रेमधन की रचना हो या यो कहे कि

भारतेन्तु काल से लेकर प्रेमचंद के आक्समिक काल तक अर्थात 1920 ई. से 1925 ई तक पूरा का पूरा कहा था', 'एक टोकरी भर मिट्टी', 'दुलाईवाली', 'रक्षाबन्धन' आदि इसी दौर की महत्वपूर्ण कहानियाँ है।

1917 में गाँधीजी का भारतीय राजनीति में प्रत्यक्ष रुप से पदार्पण होता है। दक्षिण आफ्रिका से घुमकर आने के वाद वे भारत का भ्रमण करते है और बिहार के चम्पारण में नीलहर किसानों द्वारा किये गये आन्दोलन में भागीदारी करते हैं, जिसके कारण किसान इन्हें नेता के रुप में स्वीकार कर लेते हैं। 1930 तक आते–आते गाँधी स्वाधीनता आंदोलन के सबसे बड़े नेता बन गयें तथा 1936 तक भारतीय कांग्रेस ने पूर्ण स्वतंत्रता का लक्ष्य घोषित कर दिया। गाँधीजी ने 'सत्य अहिंसा', निष्क्रिय प्रतिरोध आदि विचारों को प्रस्तावित किया। गाँधी के इसी दर्शन को उत्तर आधुनिक युग में नेहरु ने विकसित किया। सुभाषचन्द्र बोस, राममनोहर लौहिया और जयप्रकाश नारायण इन राजनीतिक विचारको ने समाज से लेकर राजनीति तक अपने विचारों का प्रभाव डाला। हिन्दी कथा साहित्य में यह पूरा युग अपने पूरे वैभव के साथ रुपान्तरित हो रहा था। बड़े–बड़े कथाकार कहानी, उपन्यासों द्वारा इस युग को चित्रित कर रहे थे। कल्पना के सर्वोच्च कवि प्रसाद जहाँ कंकाल, तितलि जैसे उपन्यास एवं पुरस्कार 'ममता', 'गुण्डा', 'मधुआ', 'आकाशदीप', 'घीसु', 'नूरी' जैसी कहानियाँ लिख रहे थे वही शताब्दी के सबसे बड़े कवि निराला भी 'कुल्लीभाट', 'विल्लेसुर बकरीहा' जैसे क्रांतकारी कथा सृजन में लगे हुए थे। प्रेमचंद की कहानियाँ 'दुनिया का अनमोल रतन, शेखमखमुर यही मेरा वतन है', सासांरिक प्रेम और देशप्रेम–भावना स्तर पर राष्ट्रीय चेतना से अनुप्रमाणित है। इधर गोदान तक पहुँचने का प्रेमचंद का उदगम भी रंग ला रहा था। अतः कथा साहित्य का मध्यदौर मुख्यतः सुधारवाद, गाँधीवाद, नेहरुवाद का दौर था, उस दौर की युग चेतना ने हिन्दी को सुन्दर कथा साहित्य का संसार दिया।

सन् 1970 ई. में भारत के पूर्वी इलाके मे नक्सलवादी आन्दोलन शुरु हुआ। इस आन्दोलन का उद्धेश्य दुसरी आजादी प्राप्त करना था क्योंकि 1947 ई. में जो आजादी मिली थी वह सिर्फ राजनीतिक हस्तान्तरण मात्र थी। इस आन्दोलन के प्रभाव से साहित्य तथा साहित्यकार भी न बच सके।

देश स्वाधीन हुआ। भारतीय गणतंत्र की स्थापना हुई। संविधान लागु हुआ और इसी समय कथा लेखन के सम्बन्ध में विविध धाराएँ एक साथ प्रभवित होने लगी। यह युग विदेशी विचारधाराओं के प्रभाव का युग था। मार्कसवाद और मनोविश्लेषणवाद ने तो सारी दुनियाँ को अपने प्रभाव मे ले हि लिया था, हिन्दुस्तान मे उसका रंग और भी गहरा हो गया।

1917 में रुसी क्रांति सफल हुई। सोवियत रुस का नेतृत्व लेनिन के हाथ में आया जिससे दुनियाँ के सर्वहारा ने राहत की सांस ली। समता और समानता पर आधारित एक बेहतर समाज की कल्पना रुस ने सामने रखी। इस क्रांति से दुनियाँ के सभी देश प्रभावित हुवे। भारत और उस वक्त भारत के वरिष्ट नेता गाँधी और नेहेरु भी इस आन्दोलन से आन्दोलित हो उठें। कानपुर मे गणेश शंकर दिधार्थी ने 'प्रलाप पग' में छिप–छिप कर रुसी साहित्य को मंगाना शुरु किया। रात मे हिन्दी के नौजवान लेखक कवि रुसी इसका अध्ययन करने लगे। डा. जनेश्वर वर्मा के अनुसार स्वयं प्रेमचंद भी शनिवार को यहाँ आया करते थे तथा शनिवार और रविवार को रुककर रुसी साहित्य का अध्ययन कर लौट जाते थे। तात्पर्य यह कि समता का दर्शन धीरे–धीरे हिन्दुस्तान मे प्रचलित होने लगा था। 1930 ई. के वाद काँग्रेस के भीतर ही युवा नेताओं के इस समाजवादी दल का गठन कर लिया था। अर्थात् काँग्रेस की धारा भी समाजवाद की और मुड़ने लगी थी। जब क्रांतिकारी आंदोलन विफल हुआ तो जो बचे हुये नेता थे वे सब भी मार्कसवादी हो गयें।

1925 में कानपुर मे कम्युनिस्ट पार्टी का गठन हो गया और 1935–36 ई. में ब्रिटेन की तरह भारत मे भी 'प्रगतिशील लेखक संघ' का निर्माण हो गया। 1925 से 1936 का यही दौर है जब हिन्दी का लेखक समाजवाद की ओर जुड़ा 'गोदान' तक आते–आते प्रेमचंद भी समाजवादी हो गयो और उन्होने अपने को 'बाल्सेविक' कहा। इस तरह हिन्दी कहानी की धारा अब प्रगतिशील हो गयी। वर्ग–संघर्ष, शोषण का विरोध असमानता का विरोध ने रुढ़ियों एवं पाखडों का खण्डन, भावुकता के स्थान पर विवेक को महत्व प्रभाव के जगह पर संघर्ष का महत्व, कर्म को जीवन का मुल्य मानना, ये सारी प्रवृतियाँ इस दौर की कहानियों में देखने को मिलती है। 'सवा सेर गेहुँ', 'ठाकुर का कुआँ', 'कफन', 'पुस की रात', कहानियों में प्रेमचंद ने किस परम्परा की शुरुआत की उसका विकास यशपाल, रांगेय राघव, राहुल सांकृत्यापन, अमृत राय, भैरव प्रसाद गुप्त, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, र्मांकण्डेय शेखर जोशी, राम रंजन, काशीनाथ सिंह और इन जैसे तमाम कथाकारो की कहानियों में देखा जा सकता है। इन्होने कहानी के स्वर को परम्परा से जोड़कर जीवनमय और संघर्षमय बना दिया। हिन्दी कहानी में यह परम्परा इतनी मजवूत हुई कि आज भी जनवादी कहानी के नाम से यह परम्परा फल–फुल रही है। आज के तीनो महान कथाकार संजीव स्वंयप्रकाश तथा उदयप्रकाश मार्कसवादी ही हैं। अतः मार्कसवादी प्रभाव ने हिन्दी कथा साहित्य को प्रगतिशील बना दिया।

प्रसिद्य मनोवैज्ञानिक 'डा. सिग्मंड फ्रायड' के मनोविश्लेषणवाद से भी हिन्दी कहानी का विकास अधुरा न रह सका। फ्रायड अवचेतन में विश्वास करते थे, चेतन में नही इनकी मान्यता है कि प्रत्येक मनुष्य के भीतर एक दुसरा मनुष्य रहता है और वही दुसरा मनुष्य वास्तविक अर्थो में सच्चा और सही मनुष्य होता है। इसीलिए हिन्दी की मनोवैज्ञानिक कहानियों पर भी सबसे अधिक प्रभाव इसी 'अवचेतन' का है। इन कहानियों मे अर्न्तमन की गुत्थियाँ ज्यादा है और उन्ही का विश्लेषण हुआ है। जैनेन्द्र की 'जाह्नवी', 'पाजेब', 'पत्नी' आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं।

फ्रायड का मानना था कि नर केवल नर हे और नारी केवल नारी। इन दोनो के बीच का सम्बन्ध सिर्फ

एक तखपर अधारित है और वह है –Sex बाकी जितने भी रिश्ते है वो मनुष्य के बीच सभ्यता के रिश्ते हैं। यह कहानी आंदोलन 'अह्म' अर्थात 'मैं' या 'आत्म' को सबसे ज्यादा महत्व देता है। मनोवैज्ञानिक कहानी इसी अह्म पर आधरित है। यही कारण है कि यह कहानी आन्दोलन समाज की सभी परम्पराओं को ध्वस्तं कर उसपर प्रश्नचिन्ह लगाता है। इन कहानियों के पात्र समाज से लड़ते–लड़ते अर्न्तमुखी हो जाते हैं, सिमट जाते हैं, मनोरोगी हो जाते है और कुछ तो आत्महत्या कर लेते हैं। जैनेन्द्र अज्ञेय इलाचन्द्रजोशी यहाँ तक कुछ नयी कहानी अन्दोलन दौर के कहानिकारो पर भी इसका प्रभाव पड़ा।

20वी शताब्दी में 'अस्तित्ववादी दर्शन' का प्रभाव भी हिन्दी कथा साहित्य पर पड़ा। 'अस्तितववाद' को ही कई विद्वानों ने प्रयोगवाद कहा और उनकी मान्यता है कि 'प्रयोग' ही साहित्य का मुख्य लक्ष्य है। उनका मानना है कि मनुष्य की असिमता की रक्षा के लिए जरुरत पड़ने पर धर्म, मोक्ष, संस्कृति, सभ्यता सबको छोड़ा जा सकता है। उनके अनुसार ईश्वर और धर्म की सत्ता मनुष्य से बढ़कर नही हो सकती। नयी कहानी के उत्तरार्द्य मे दौर में हिन्दी कथा साहित्य पर भी इस दर्शन का प्रभाव पड़ा। कथाकारों मे सबसे प्रवल बौद्यिक कथाकार अज्ञेय ने इस मुख्य रुप से इस दर्शन को सृजन मे उतारा। उनके अपने–अपने अजनवी उपन्यास, साँप, अस्तित्ववादी दर्शन से प्रभावित हैं। इस प्रकार इन दर्शन ने भी कथा साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। यहाँ तक कि आज के महान कथाकारों संजीव, उदयप्रकाश आदि मे भी अस्तित्ववादी दर्शन का बिम्ब जब–तब उभर आता है। इसके अलावा मोहन राकेश, लक्ष्मीकांत वर्मा, जगदीश गुप्त, र्धमवीर भारती कुंवर नारायण आदि कथाकार भी अस्तित्ववादी दर्शन से प्रभावित रहें है।

निष्कर्ष

पाश्चात्य विचारधारा में मार्क्सवाद, फ्रायडवाद, अस्तित्ववाद और मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव हिन्दी कहानी पर सबसे ज्यादा पड़ा। तात्पर्य यह है कि इन्हीं विचारधाराओं ने ही हिन्दी कहानी लेखन के विकास मे अभूतपूर्व योगदान दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *आधुनिकता और हिन्दी साहित्य :– इन्द्रनाथ मदान*
2. *हिन्दी कहानी का विकास :– मधुरेश*
3. *कहानी का अलक्षित प्रदेश :– मृत्युंजय पाण्डेय*
4. *कहानी से संवाद :– मृत्युंजय पाण्डेय*